गुरु तत्त्व

1. दुलहिनी गावहु मंगलाचार, हम घर आये परम पुरुष भरतार।

2. तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तब राती ।
   गुरु देव मेरे पाहुन आये, मैं जोवन में माती ।।

3. सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रह्मा बेद उचार ।
   गुरुदेव संग भाँवरि लेइहौं, धन धन भाग हमार ।।

4. सुर तेंतीसों कौतुक आये, मुनिवर सहस अठासी ।
   कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अविनासी ।।

राधास्वामी, यह शब्द मैंने सुना. ऐसे शब्दों को जो सत्संग स्त्री-पुरुष अथवा भाई-बहनें सुनते हैं वे इनको क्या समझ सकते हैं? नहीं. मैं कहना नहीं चाहता, यह तो बुल्लेशाह वाली बात है.

सच आखाँ ताँ भाम्बड़ मचदा ऐ,
झूठ आखाँ ताँ कुज बचदा ऐ,
जी दोहाँ गल्लाँ तों जचदा ऐ,
जच जच के जिव्वा कँहदी ऐ,
मुँह आई बात न रहँदी ऐ,

गुरु तत्त्व का ययार्थ ज्ञान न होने से क्या होता है ? कल मुझे एक महिला मिली जो किसी महात्मा से अधिक प्रेम करती थी. उसने प्रेमवश अपने सब आभूषण भी उस महात्मा के अर्पण कर दिये. अब गुरु महाराज तो चले गये, उस माता की सन्तान व अन्य सम्बन्धी उसकी देखभाल नहीं करते. यह भाषण मैं संवेदनशील हृदय से दे रहा हूँ. स्थिति की जाँच करने से ज्ञात हुआ कि उस महात्मा का इस महिला से अनुचित सम्बन्ध भी था जो कि इसने ने स्वीकार किया. ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि गुरु के रूप को समझा नहीं गया.

आगरा निवासी एक स्त्री मुझे मिली, वह भक्त थी. उसने मुझे बताया कि जिस महात्मा को उसने गुरु धारण किया हुआ था वह स्त्री शिष्याओं के साथ भोग विलास किया करता था. उसका कहना था कि वह कृष्ण महाराज है. जैसे भगवान कृष्ण को गोपियों के साथ रमण अथवा भोग विलास करने से कोई पाप नहीं था ऐसे ही उसे भी कोई पाप नहीं. संसार वालों ने गुरु के रूप को समझा नहीं जिसका परिणाम आप लोगों के सामने है.

कहते हैं कि दुर्वासा ऋषि जमुना नदि के दूसरे पार बैठे थे, गोपियाँ उनके लिये नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ ले कर जा रही थीं किन्तु जमुना में प्रचंड जलधारा के कारण पार नहीं जा सकती थीं. श्री कृष्ण महाराज ने गोपियों से कहा कि जमुना से कह दो कि यदि कृष्ण आजन्म जती है तो तुम हमारे लिये मार्ग छोड़ दो. उन्होंने जमुना तट पर जा कर जब ऐसे ही कहा तो जमुना शान्त हो गई तथा गोपियों ने नदी पार कर के दुर्वासा जी को सब का सब भोजन खिला दिया. जब पीछे देखा तो जमुना नदी में पूर्ववत पानी का वेग अधिक था जिसे पार करना असम्भव था. तब दुर्वासा जी ने कहा कि जाओ जमुना जी से कह दो कि यदि दुर्वास जी निराहारी हैं तो हमें रास्ता दो, जमुना जी को गोपियों ने ऐसा ही कहा पानी उतर गया और गोपियाँ उसे पार कर के वापस लौट आईं.

मैंने अपने को सन्त सत्गुरु वक्त कहा है, मैं अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर जाना चाहता हूँ. संसार वाणी के जाल फँसा हुआ है, लोग गुरु तथा कृष्ण के यथार्थ रूप को न समझ कर अज्ञान में आ गये और आज कल के महात्मा भी इस अज्ञान के वश में हुए तथा स्त्री जाति भी इस अज्ञान के कारण बच न सकी. वस्तु क्या थी तथा क्या समझी जा रही है.

दुलहिनी गावहु मंगलाचार, हम घर आये परम पुरुष भरतार।

दुलहिनी हमारी सुरत है. यह परम सुख अथवा परम शान्ति चाहती है. स्त्री भी यदि पति से विवाह करती है तो शारीरिक और मानसिक सुख चाहती है. सुरत के घर में कौन सा गुरु अथवा परम पुरुष आयेगा? इस संसार में बाहर के गुरु को भी परम पुरुष अथवा पूर्ण धनी कहा गया है. जब कोई किसी के घर में जाता है तो भाव तथा प्रेमवश उसको सुन्दर सिंहासन पर बैठाते हैं. उसकी आरती उतारते हैं तथा फूल चढ़ाते हैं. मैंने भी यह सब कुछ किया हुआ है. किसी को क्या पता कि वह गुरु

चोर है या ठग है. वह कौन है अथवा उसके अन्तर में क्या है. मैं बाहर जाता हूँ तो लोगों को कहता रहता हूँ कि तुमने मेरा क्या देखा है? तुम्हें क्या पता कि मैं चोर हूँ अथवा ठग हूँ या मैं मन्दिर के लिए धन बटोरने के लिये आया हूँ.

वाणी के जाल में तथा अपने अज्ञान में फँस कर मानव जाति लुटी जा रही है. स्त्री जाति के सत लिये जा रहे हैं. जम्मू के महन्त आनन्दसागर के विषय में आप लोग आज कल समाचार पत्रों में पढ़ रहे हैं.

मैं समय के संत सत्गुरु के रूप में तथा अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिये यह घोषणा किये जाता हूँ कि वह परम पुरुष यदि कोई है तो वह सब से ऊँचा पुरुष है. उसमें पौरुष होता है. वह शब्दब्रह्म तथा परब्रह्म है. अर्थात शब्द तथा प्रकाश है. जैसे मानव में सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति है वैसे ही वह भी सारे संसार की रचना करता है. जब सुरत प्रकाश और शब्द में चली जाती है अथवा सुरत के अन्तर जब प्रकाश तथा शब्द प्रकट होता है तो उस समय वह सुरत का सच्चा भरतार है. जैसे कबीर साहिब का कथन है:-

बाबल मेरा ब्याह करा दे अनघड़या बर लाये ,

वह पुरुष न फकीर चन्द है, न दाता दयाल जी महाराज हैं, न स्वामी जी हैं तथा न गुरु नानक देव जी हैं. इन महापुरुषों ने तो जीवों को सत्संग कराकर वास्तविक तथा सच्चे सत्गुरु अथवा परम पुरुष का पता देना है. यही बात राय सालिगराम साहिब जी महाराज राधास्वामी मत के संस्थापक ने अपनी प्रेम-वाणी में कही है कि सत्गुरु केवल शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और प्रकाश उनके चरण हैं. ब्राह्य शरीरधारी गुरु ने, यदि वह वास्तव में गुरु है तो उसने शब्द स्वरूपी गुरु तक पहुँचने में तुम्हारी सहायता करनी है.

दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी ने आज्ञा दी थी कि जीवन अवधि में संतमत की शिक्षा में उचित परिवर्तन कर जाना. मैंने अपने जीवन में जो अनुभव किया वह बताता हूँ परन्तु दावा कोई नहीं.

जब सुरत को अपने अन्तर में प्रकाश आ जाता है तो उसको हर्ष तथा आनन्द मिलता है. उस समय वह आनंद विभोर हो कर मंगलाचार गाती है. परन्तु भोले-भाले सत्संगियों ने ब्राह्य गुरु को ही परमपुरुष और भरतार समझ लिया है. ठीक

है, यह उनकी आवेगात्मक भावना है और उस समय उनको आनन्दमय प्रतीत होती है किन्तु जीवों की दृष्टि को ऊँचा न किया गया तो जैसे मैंने पहले उदाहरण दिये हैं संसार में व्यभिचार फैल जायेगा और जीव लुट जायेंगे. भोले-भाले जीव जिनको समझ नहीं है वे वाणी के जाल और झूठे गुरुवाद में फँस कर पथभ्रष्ट हो रहे हैं और उन्मत्त बनाये जा रहे हैं. प्रकृति ने इस दुर्दशा को निवारण करने के लिये मेरे मस्तिक को हिलाया.

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तन राती।

इस अवस्था में पहुँच कर सुरत तन-मन से हर्षित हो जाती है. पाँच तत्त्व पाँच कर्मेंद्रियाँ और पाँच ज्ञानेंद्रियाँ भी प्रसन्न हो जाती है.

व्यक्ति का घर उसके मष्स्तिक में है. लोग कहते हैं कि बाबा जी हमारे घर चलो! वे यह समझते हैं कि यदि मैं उनके घर चला जाऊँगा तो उनको कुछ प्राप्त हो जायेगा यह उनकी श्रद्धा और विश्वास है. मैं भी किसी समय चला जाता हूँ. इसके दो कारण हैं एक तो यह कि जिस प्रकार एक बालक निबल, अबल और अज्ञानी है और वह अपने पिता-माता या दादी-दादी को उँगली से पकड़ कर जिधर चाहे ले जाता है. चूँकि वह अज्ञानी है इसलिये दादा अपने पोते को प्रसन्न करने के लिये उसके कहे अनुसार उसके साथ चलता रहता है और दूसरा कारण यह है कि मुझे यह भी आशा रहती है कि सम्भव है मानवता मंदिर को भी कुछ सहायता मिल जाये. मैं स्पष्ट वर्णन कर रहा हूँ. मैंने अपने आपको और दूसरों को धोखा नहीं देना चाहता. मेरा हृदय शुद्ध है. मैं अपनी न्यूनता को निर्भय होकर जनता के सामने रखता हूँ. मैं भी मंदिर की सहायता धन से यथाशक्ति करता हूँ. बिना धन के निर्वाह नहीं. अनाथ तथा निर्धन बच्चों की पढ़ाई पर मंदिर व्यय करता है. फ्री चिकित्सालय चल रहा है. रोगियों की सेवा का भार है. मेरे विचारों के प्रकाशन पर खर्च होता है.

मैं स्पष्ट वक्तव्य इस लिये करता हूँ कि ज्ञान दृष्टि और अपनी खुशी से जो किसी की इच्छा हो मंदिर में दे जाये किन्तु रोचक और भयानक बातें कह कर और जीवों की आँखों में धूल डाल कर मैं अपना काम नहीं बनाना चाहता :-

गुरु देव मेरे पाहुन आये, मैं जीवन में माती।

वास्तविक सत्गुरु शब्दब्रह्म है तथा प्रकाश उसके चरण हैं. यदि आज राय सालिगराम साहिब जी की वाणी मेरी दृष्टि में न आती तो जो अनुभव मैंने शिष्य तथा गुरु के रूप में प्राप्त किया है उसके आधार पर राधास्वामी मत का खण्डन कर जाता. रोचक और भयानक बातों का अब भी खण्डन करता हूँ कि जीवों को पंथ में सम्मिलित करने के लिये ऐसी-ऐसी रोचक वाणियाँ कही गई हैं. तुम देखते हो जब कभी ये दूसरे महात्मा आते हैं तो ये अज्ञानी लोग हज़ारों की संख्या में भिखारी बन कर और पागल बन कर खड़े हो जाते हैं. आजकल के गुरु, लोगों को सत्य न बता कर उनको छल रहे हैं. हजूर महाराज जी ने अपनी वाणी में कहा है :-

गुरु जी मैं गुनहगार अति भारी
नर नारी बहुते बस कीने भोले भगतन धोख दिया री।

ये जितने आजकल के महात्मा हैं या पहले थे इन्होंने सत्यता से काम नहीं लिया ये सब हम निबल, अबल और अज्ञानी जीवों को धोखा देते हैं. किन्तु इनकी भी कोई भूल नहीं. मैं कितनी सत्य बात कहता हूँ किन्तु कोई सुनता नहीं. यदि सुनता भी है तो अपने अन्तर चलने का उत्साह नहीं करता और अपने अन्तर पारब्रह्म और शब्दब्रह्म को प्रकट करने का प्रयत्न नहीं करता :-

सरीर सरोबर बेदी करिहौं, ब्रह्म वेद उचार ।
गुरु देव संग भांवरी लेइहौं, धन धन भाग हमार।।

हजूर महाराज जी ने अपनी प्रेम-वाणी में लिखा है कि महासुन्न या दसवें द्वार से आगे या निर्विकल्प समाधि के उपरान्त सत्गुरु मिलता है. हजूर बाबा सावन सिंह जी भी कहा करते थे कि नौ द्वार पार करो तो आगे सत्गुरु मिलेगा. परन्तु लोग तो यह समझते हैं कि दसवें द्वार से आगे हजूर बाबा सावन सिंह जी खड़े होंगे. वह सत्गुरु जो आगे मिलेगा वह शब्द स्वरूपी और प्रकाश स्वरूपी है महासुन्न के पश्चात वेदी रची जाती है ब्रह्म वहाँ शब्द पढ़ते हैं. हमारे शुभ संकल्पों के कारण हमारे अन्तर प्रेम उत्पन्न होता है :-

सुर तेतीसों कौतक आये, मुनिवर सहस अठासी।

यह सब तुम्हारे मन की वृत्तियाँ हैं शारीरिक और मानसिक,भाँवर के समय यह सब एकत्रित हो जाती हैं और गुरु के दर्शन हो जाते हैं.

सत गुरु चरण गृह मेरे आये, मेरे सोते भाग जगाये
सत गुर मेरे घर में आये, हँस अकाश देख ले जाये।

यह वाणी रोचक है. जिज्ञासुओं के लिये इसका लाभ भी है. ऐसी वाणी से उनके अन्तर प्रेम का भाव उत्पन्न होता है किन्तु कई बार इसका परिणाम बुरा भी होता है समय में परिवर्तन आ गया. अब चूँकि गुरुओं का मान होने लगा है अत: जो भी उठता है गुरु बन जाता है. किस लिए? अपने धन अथवा अपने भोग विलास के लिये. जीवों के लिये कौन गुरु काम करता है. जीव अज्ञानी हैं उनको समझ नहीं है. गुरु के रूप को समझना अति कठिन है.

एक बार मेरे मकान में सत्संग हो रहा था. सत्संग के पश्चात दो युवतियाँ आईं तथा वे मेरे गले लिपट गई. मैंने उनको अश्वासन दिया. बात समाप्त हुई. सायं काल को मेरी स्त्री ने मुझे कहा कि आप वृद्ध हो गये हो हमारी संतान भी युवावस्था में आ गई है कुछ लज्जा करो. मैंने पूछा क्या बात है. उसने कहा तुम्हें ज्ञात नहीं कि वे दो गोरे रंग की सुन्दर युवतियाँ आईं और आपके गले लिपट गई. मैं बहुत हँसा तथा उससे कहा क्या तुमको मेरे चरित्र पर शंका है. उसने कहा कि यह बात नहीं है परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह उचित नहीं है. जो कुछ मेरी स्त्री ने कहा यथार्थ था. गुरुओं ने जीवों को संस्कार ही ऐसा दिया है कि वे गुरुओं की सेवा तथा पूजा करते रहें. गुरु के रूप को न समझ कर ही ऐसी दुर्दशा होती है. जब तक तुमको सच्चे सत्गुरु के रूप का ज्ञान नहीं होगा तब तक तुम अपने आदि घर नहीं जा सकते हो. चाहे ब्राह्य गुरु को कितना ही मानो. ब्राह्य गुरु का कर्त्तव्य आपको सच्चे गुरु का भेद बताना है.

हजूर दाता दयाल की एक सत्संगिन है. वह जब भी आती है तो मेरे पांव अपनी छाती से रगड़ती है. ऐसा क्यों है? क्योंकि गुरुमत वालों ने गुरु के रूप को जीवों को नहीं बताया है तथा जीवों को गुरु पशु बना दिया है. अत: सच्चे सत्गुरु को बताने के लिये मैं अवतार ले कर आया हूँ जिसका चित्त करे मेरी पुस्तक पढ़े जिसका न चाहें न पढ़े. चित्त करे मेरी बात सुने न करे न सुने. मैं तो गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिये अपना कर्म भोगता हूँ.

कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अविनाशी।।

अन्तर में जब शब्द प्रकट हो जाता है तो वही अविनाशी है. कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब या फकीर चन्द जी कैसे अविनाशी हो सकते हैं! ये महात्मा अब कहाँ चले गये?

अत: ए भारतवर्ष के धर्मावलम्बियो तथा गुरु मत वालो! संसार में वास्ताविक ज्ञान बताने के लिये मैं सत्यता का वर्णन कर चला. मैं जानता हूँ कि जीव निबल, अबल और अज्ञानी हैं. एक छोटा बालक दादा-दादी, नानी या अपने माता-पिता का हाथ पकड़ कर जिस ओर इच्छा हो घुमाता फिरता है तथा वे प्रेमवश उसकी इच्छानुसार चलते रहते हैं. क्यों? क्योंकि वह बालक अज्ञानी है. परन्तु यदि युवक ऐसा करना चाहे तो क्या वे दादा-दादी, माता-पिता ऐसा करेंगे? अत: ऐ कृषक जी! आप गुरवाई करते हैं मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि मेरी दाढ़ी के सफेद बालों की लाज रखना. दूसरे महात्माओं को कहता हूँ कि किस लिये तुम झूठे धन तथा झूठे मान के लिए झूठी गुरवाई का स्वाँग बना कर संसार को छलते हो.

कबीर साहिब भी विवाह करके चले गये और हम भी राधास्वामी दयाल के साथ विवाह कर के चले जायेंगे. चूँकि वहाँ तक पहुँचना कठिन है इसलिये आरम्भ में गुरु की सेवा यह है कि पूर्ण गुरु का सत्संग सुनो. उस पर चलो. यही गुरु की पूजा है और यही राधास्वामी दयाल ने अपनी वाणी में कहा है:-

दर्शन करे वचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने
गुन गुन काढ़ लए तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भौ सब गई गँवाई

जीव निबल, अबल और अज्ञानी हैं. मैं भी तुम्हारे साथ खेल करता हूँ. अत: मैंने निर्णय किया है कि यहाँ मंदिर में रात्रि के समय कोई स्त्री अकेली न रहे. सत्संग में आएँ तथा सत्संग सुन कर चली जाएँ. यदि रात्रि को रहना चाहें तो तीन स्त्रियाँ मिल कर रह सकती हैं. या स्त्री अपने किसी निकट सम्बन्धी के साथ रह सकती है. ए मानवता मंदिर वालो! यह संसार एक ऐसा खेल है जिससे बचना बड़े महावीर का काम है.

सब को राधास्वामी!